मृदुला गर्ग कृत... 'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास में नारी

*** प्रो. डॉ. हाशमबेग मिर्जा**
शोध निर्देशक,
कला, वाणिज्य व विज्ञान, महाविद्यालय, नळदुर्ग
जि.धाराशिव
भ्रमणध्वणी 9421951786
Email drmirzahm@gmail.com

**** सिनगरवार पांडूरंग गिरजप्पा**
शोध छात्र,
रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय,तांबरी विभाग, धाराशिव
जि.धाराशिव
भ्रमणध्वणी 9096909936
Email singarwarpandurang@gmail.com

शोधसार:

'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास मृदुला गर्ग की पहली कृति है जिसे ई.सन् 1975 में अक्षर प्रकाशन से राजेंद्र यादव ने छापा था । यह स्त्री–पुरुष सम्बन्धों पर आधारित एक प्रौढ़ एवं सर्वाधिक चर्चित व प्रशंसित उपन्यास है । यह शायद पहला उपन्यास था किसी भी भाषा में जिसमें विवाह के इतर प्रेम होने पर स्त्री को कोई अपराध बोध नहीं होता है । यह उपन्यास समय में बंधकर कर नहीं बल्कि आगे के बारे में लिखा गया है । ई. सन 1975 में जब लेखिका विवाहेत्तर सम्बन्धों के बारे में लिख रही थी तो उस समय समाज में ऐसी घटनाएँ घटित हो रही थी लेकिन सच कहने का जोखिम कोई उठाना नहीं चाहता था । लेखिका 'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास के माध्यम से हिन्दी साहित्य में नए मानदण्ड को लेकर उपस्थित होती हैं । जो पुरातन रुढ़िवादी स्त्रियों के पति धारणा को ध्वस्त करती हैं । अपने अधिकांश उपन्यासों में आज की नारी को उसके सहज मानवीय रूप में चित्रित करती है तथा उसके अस्तित्व को स्वतन्त्र रूप में दृढता पूर्वक स्वीकार करती है ।

बीज शब्द: 'चित्तकोबरा', 'अनित्य', 'डैफोडिल जल रहे हैं', 'ग्लेशियर से', 'उर्फ सैम', वय:सन्धि

प्रास्तावना:

मृदुला गर्ग जी का जन्म 25 अक्टूबर, 1938, कोलकाता में हुआ। वे हिंदी की सबसे लोकप्रिय लेखिकाओं में से एक हैं । उपन्यास, कहानी संग्रह, नाटक तथा निबंध संग्रह सब मिलाकर उन्होंने 20 से अधिक पुस्तकों की रचना की है । 1960 में अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि लेने के बाद उन्होंने 3 साल तक दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य किया है । उनके उपन्यासों को अपने कथानक की विविधता और नयेपन के कारण समालोचकों की बड़ी स्वीकृति और सराहना मिली। उनके उपन्यास और कहानियों का अनेक हिंदी भाषाओं तथा जर्मन, चेक, जापानी और अँग्रेजी में अनुवाद हुआ है । वे महिलाओं तथा बच्चों के हित में समाज सेवा के काम करती रही हैं । उनका उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' नारी–पुरुष के संबंधों में शरीर को मन के समांतर खड़ा करने और इस पर एक नारीवाद या पुरुष–प्रधानता विरोधी दृष्टिकोण रखने के लिए काफी चर्चित और विवादास्पद रहा था । उन्होंने इंडिया टुडे के हिन्दी संस्करण में 2003 से 2010 तक 'कटाक्ष' नामक स्तंभ लिखा है, जो अपने तीखे व्यंग्य के कारण खूब चर्चा में रहा।

उन्होंने कुल मिलाकर आठ उपन्यास लिखे है, जिसके शीर्षक इस तरह से है । 'उसके हिस्से की धूप', 'वंशज', 'चित्तकोबरा', 'अनित्य', 'मैं और मैं', 'कठगुलाब' और 'मिलजुल मन' । ग्यारह कहानी संग्रह– 'कितनी कैदें', 'टुकड़ा

टुकड़ा आदमी', 'डैफोडिल जल रहे हैं', 'ग्लेशियर से', 'उर्फ सैम', 'शहर के नाम', चर्चित कहानियाँ, 'समागम', 'मेरे देश की मिट्टी अहा', 'संगति विसंगति', 'जूते का जोड़ गोभी का तोड', चार नाटक– 'एक और अजनबी', 'जादू का कालीन', 'तीन कैदें और सामदाम दंड भेद', तीन निबंध संग्रह– 'रंग ढंग', 'चुकते नहीं सवाल' तथा 'कृति और कृतिकार', एक यात्रा संस्मरण– 'कुछ अटके कुछ भटके' तथा दो व्यंग्य संग्रह– 'कर लेंगे सब हजम' तथा 'खेद नहीं है' यह अब तक प्रकाशित हुए हैं ।

मृदुला गर्ग कृत... 'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास में नारी संवेदना :

'उसके हिस्से की धूप' मृदुला जी का यह पहला उपन्यास तीन पात्रों को आधार बनाकर लिखा गया है । 149 पृष्ठों वाले इस उपन्यास को तीन भागों में विभाजित किया गया है । तीन भागों का विभाजन तीन पात्रों के नामों के धरातल पर किया गया है । जैसे– 'जितेन', 'मधुकर' और 'मनीषा', जो उपन्यास के केन्द्र में है । वर्णनात्मक, पुर्वदिप्ती, स्मृत्यावलोकन शैलियों के माध्यम से उपन्यास को लेखिका ने लिखा है । जिसका मुख्य उद्देश्य वैवाहिक जीवन की उदासीनता, यौन संबंधों से उत्पन्न द्वन्द्वों को निरूपित करके स्त्री स्वतंत्रता उसके स्व–अस्तित्व की खोज पर आधारित है ।

इस उपन्यास की कथा इस तरह से है । 'मनीषा' और 'जितेन' का विवाह प्रबन्धित विवाह था । 'जितेन' एक फैक्टरी में मैनेजर है । उसके पास समय का अभाव रहता है । शायद इसलिए 'मनीषा' के पास समय ही समय है । वह समय काटने के लिए कालेज में लेक्चरर हो जाती है । बचपन से ही उसके अचेतन मन में प्रेम विवाह करने की आकांक्षा थी । जिसका वह दिवास्वप्न देखा करती थी । विवाहोपरान्त अपने पति 'जितेन' के प्रेम और अपने अज्ञात प्रेम में उलझी रहती है । उसकी अतृप्ति, दमित इच्छाएँ और कुण्ठाएँ उसके चेतन मन पर भारी पड़ जाती है । वह ऐसे अचेतन की कल्पना करती है, जिसमें पड़कर मनुष्य अपने अस्तित्व को भुला बैठता है, बड़े–से–बड़े आत्म त्याग करने को तत्पर हो जाता है ।

विवाह के दो वर्ष बाद भी 'जितेन' के साथ रहते हुए भी उसकी उदासीन और गहरने लगी थी । उसके मन की अतृप्ति भावना सम्भोग के समय भी कम नहीं होती जिससे वह अपना अस्तित्व भुला सके। इसलिए 'मनीषा' के मन में सदैव द्वन्द्व चलता रहता है कि, क्यों दोनों इस आलीशान कोठी की चारदीवारी में पड़े सड़ रहे हैं । सदैव उसके अहम को ही क्या झुकना पड़ता है । वह अपने पति की व्यस्तता को अपने प्रति उसकी उदासीनता समझती है ।

उपन्यास का एक अन्य पात्र भी है जिसका नाम 'सुधा' है । सुधा का ॅलेज में 'मनीषा' की साथी है । वह मानती है कि, 'प्रेम होने' और 'दांत दर्द' होने में कोई अन्तर नहीं है । वह प्रेम का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं मानती उसे वयःसन्धि की रोमान्टिक भावना मानती है । 'सुधा' का स्थिरचित्त 'मनीषा' की मनःस्थिति को एक चुनौती लगता है । 'सुधा' ही उसे 'मधुकर' से मिलाती है । 'मधुकर' एक हँसमुख, स्वस्थ, जीवनी शक्ति से भरपूर युवा प्रोफेसर है । वह 'मनीषा' को देखकर उस पर मुग्ध हो जाता है, और बिना कुछ जाने बूझे उसे प्राप्त करने को बेचैन हैं । वह प्रेम का पक्षपाती है । प्रेम उसके लिए अलौकिक भावना है । वह जानते हुए भी कि 'मनीषा' एक विवाहित स्त्री है, वह उससे प्रेम करने लगता है । अपनी ऊब को मिटाने और खालीपन को भरने के लिए 'मनीषा' प्रो. मधुकर से प्रेम संबंध स्थापित करती है ।

'मनीषा' कहती है कि, ''मधुकर के प्रथम चुम्बन से उसे ऐसा लगा जैसे पास खिले जवा कुसुम ने आहिस्ता से उसके होठों को अपनी मृदुल पंखुड़ी से छू लिया हो । उसके नन्हें से स्पर्श से उसका सारा शरीर रोमांचित हो उठा। उसके अतृप्ति मन को तृप्ति से पूर्ण कर देता है । अपने आप में वह कुछ नहीं थे पर यह चुम्बन! यह प्रेम की परिणति था, प्रेम की घोषणा अपने आप में एक पूर्ण क्षण। उसने उसके हृदय की गहराइयों में झाँका था उसकी आत्मा के संगीत को सुना था, और उससे एक सुर हो उसमें लीन हो गया था ।"1

'मनीषा' अपनी अतृप्ति भावना और अधूरेपन (एकरसता) को मधुकर के प्रेम से अपने जीवन को भर देना चाहती है। इसलिए वह 'जितेन' से विवाह विच्छेद करने की सोचती है। वह उपन्यास में कहती है, ''जिस आदमी को उससे दो बात करने की फुर्सत नहीं है, उससे कैसा लगाव? जो रिश्ता रात के अँधेरे में जन्म लेता है, और चन्द घंटे कायम रहकर दिन के उजाले के साथ-साथ खत्म हो जाता है, उसे तोड़ने में कैसा संकोच?''2 'मनीषा' जितेन को अपने और 'मधुकर' के रिश्ते के बारे में सब कुछ बता देती है। जितेन उसके प्रेम के बारे में कहता है- ''यह महज आकर्षण है। जब वह चुक जायेगा तो क्या करोगी? प्रेम जरूर चुक जाता है। यही उसकी नियति और यही उसकी त्रासदी।''3

'मनीषा' बचपन से प्रेम विवाह करने की प्रबल इच्छा को 'मधुकर' के माध्यम से पूरा करना चाहती है। 'जितेन' अत्याधिक स्थिरचित व्यक्तित्व वाला है। वह इतनी उदार दृष्टि रखता है कि, वह 'मनीषा' को 'मधुकर' के पास जाने की अनुमति दे देता है, और कहता है-''चुनने का अधिकार सबको है, एक बार और सोच लो। 'तलाक' की जरूरत मैं नहीं समझता। प्रेम जीवन का लक्ष्य नहीं हो सकता। पर मानव स्वतंत्रता में उसकी गहरी निष्ठा है।''4 वह 'मनीषा' से कहता है कि, ''जबरदस्ती करके तुम्हें नहीं रोकूँगा 'मनीषा' एक इन्सान का दूसरे पर इतना अधिकार मैं नहीं मानता। इतना जरूर कहूँगा, एक बार और सोच लो। मैं तुम्हें चाहता हूँ बस और चाहता हूँ तुम न जाओ। इसके अलावा सिर्फ यह कह सकता हूँ कि, कभी लौटना चाहो तो लौट आना।''5 'मनीषा' इसे केवल ठण्डी सहानुभूति मानती है, और अपने निर्णय पर अटल रहती है।

'मनीषा', मधुकर के साथ पुनर्विवाह कर लेती है। परन्तु उसकी रिक्तता कम नहीं होती है। उसके अंतरमन को संतुष्टि नहीं मिलती है। जिससे उसका जीवन लेखन और गृहस्थी के दो पाटों में पिसने लगता है। 'मनीषा' का यह वैचारिक द्वन्द्व मानसिक स्तर पर तो चलता ही है, साथ ही रचनात्मक स्तर पर भी चलने लगता है। 'मधुकर' के साथ रहते हुए चार साल गुजर गये हैं, और उसकी भावुकता का उबाल कम हो गया है।

एक दिन 'जितेन' जब उसे नैनीताल में मिल जाता है तो, एक बार फिर उसके प्रेमाकर्षण में बंध जाती है। 'जितेन' से मिलकर प्रफुल्लित मन से वह घर जाती है। तो अब उसे 'मधुकर' से उसका बात करना भी अच्छा नहीं लगता है। 'जितेन' के मिलने के बाद वह 'मधुकर'की बातों में ऊब महसूस करने लगती है, और एक बार फिर उस रास्ते पर चल देती है जिसे कुछ देर पहले अर्द्ध सम्मोहन की स्थिति में उसने पार किया था।

नैनीताल से लौटाने के बाद जब अचानक 'जितेन' का फोन आता है, तो वह शारीरिक गरमाहट महसूस करती है। जितेन उसे इन्टर कान्टिनेन्टल होटल के हाउस बोट में बुलाता है। वह वहाँ जाना स्वीकार कर लेती है। अपनी दैहिक क्षुधा को शान्त करने के लिए वह बिल्कुल सही समय पर वहां पहुँच जाती है। आज इतने दिनों बाद 'जितेन' के कठोर आलिंगन में आकर उसने समझा कि, ''प्यार करना कला नहीं जरूरत है। यूँ तो न जाने इन्सान की कितनी जरूरते हैं... हाँ जब दोनों की जरूरत एक हो तो शरीर का मिलन अद्भुत अनुभव की वस्तु बन जाता है। देह क्या इतनी तुच्छ वस्तु है कि, कर्म करने के लिए उसे हरदम किसी-न-किसी मुखौटे की आवश्यकता है। प्यार-प्यार-प्यार...क्या चरमोत्कर्ष के दहलाते क्षण शरीर के अपने नहीं, प्यार के उधार में मिले हुए हैं... जब से वह प्यार के चक्कर में पड़ी है, वासना उससे छूट गयी है... आज पहली बार 'मनीषा' ने समझा और स्वीकारा कि शरीर का अपना एक वैभव और औचित्य है।''6 'यौनतृप्ति' ही सब कुछ है। वह 'प्यार' और 'वासना' में अन्तर करते हुए सोचती है, क्या प्रेम में देह से अनभिज्ञ रहा जा सकता है? प्रेम और देह की मिलीजुली क्रीड़ाओं को ही तो वासना का नाम दिया जाता है। तो फिर उसमें अन्तर कैसा।''7 मनीषा ने कल तक जिस 'जितेन' की व्यस्तता को उदासीन कहकर उसे अलग छिंटक दिया, वह उसकी उदासीनता नहीं बल्कि उसकी परिपक्वता है।''8

प्रेम संबंधों के विकृत होने का मूल कारण जो सामाजिक विसंगतियों की ओर संकेत करता है । जो सदियों उसकी मानवीय अस्मिता और अधिकारों का हनन कर रही है । इस दृष्टि से यह सघन सामाजिक सरोकरों से अनस्थूल है । 'जितेन' की पत्नी के रूप में 'मधुकर' का आकर्षण और 'मधुकर' की पत्नी के रूप में 'जितेन' के प्रति समर्पण की लालसा न तो 'मनीषा' की चरित्रहीनता का भाष्य रचता है, न सैक्सुअल अतृप्ति का । वह विवाह जैसे बुनियादी संस्था की अमानवीय संरचना को कटघरे में खड़ा करती है । क्यों स्त्री अपनी संवेदना, सपने और भविष्य भूलकर पुरुष की परछाई मात्र बन जाए ।

मृदुला जी ने 'मनीषा' के चारित्रिक गठन के आन्तरिक स्वरूप, संवेदना, मनोभावों, अन्तद्वन्दों, सोचों, प्रतिक्रियाओं और अवचेतना में सुप्त कामनाओं के विश्लेषण द्वारा चित्रित किया। 'मनीषा' साहित्य कला प्रेमी, सृजनशील लेखिका के रूप में अपने अस्तित्व को खोजती नजर आती है । उसकी इच्छाएँ–आकाक्षाएँ आधुनिकतावादी होने की ओर इशारा करती है । 'मनीषा' अपना स्वयं विश्लेषण करते हुए कहती है–''आखिर वह चाहती क्या है, गेंद की तरह 'जितेन' और 'मधुकर' के बीच लुढ़कते रहना, जितेन जो चार वर्ष पहले था वहीं आज भी है, और वहीं सदा रहेगा।''9 लेकिन 'मधुकर' के प्रति उसकी भावुकता कम होती जा रही है । लेकिन अब और आत्मछलना नहीं, यही मेरी कुण्ठा का कारण है । इसलिए मैं अपने से और मधुकर से, जीवन से उदासीन हो उठी हूँ, इसलिए मेरा प्रेम शिथिल हो गया है । 'जितेन' के साथ बिताये पिछले दो दिनों में उसकी दृष्टि को इतना प्रखर रूप से अन्तर्मुखी बना दिया कि, वह थोपे हुए कारणों से संतुष्ट होने वाली मुग्धावस्था में वह नहीं थी ।

'मनीषा' कल और आज वह इतनी ईमानदारी से जी चुकी थी कि, उन तमाम गांठों को तोड़ बाहर निकल आयी थी, जो जाने–अनजाने, संस्कार, अध्ययन और दूसरों के निकाले निष्कर्षों से बाध्य होकर वह अपनी बौद्धिकता व विचार शक्ति की ढीली डोरी में लगाकर अपने को बाँधती आयी थी । वह कहती है, ''जिस स्व–विश्लेषण का क्रम 'जितेन' से नैनीताल में भेंट होने पर शुरू हुआ था । आज उसके चले जाने पर पूरा हो गया। वह समझ गयी कि अपने जीवन की सार्थकता उसे अपने भीतर खोजनी होगी।"10 गोविन्द रजनीश इस उपन्यास के बारे में कहते है, ''इस उपन्यास की नायिका 'मनीषा' परम्परागत विवाह की एकरसता जितने की उदासीनता और सृजनशील मन की निष्क्रिय बेचैनी से उबकर 'मनीषा' मधुकर की भावुकता की ओर आकृष्ट होती है । उपन्यास में एक सृजनशील नारी के मानसिक संघर्ष, मनोभावों, अन्तद्वन्द्वों, सोचो, प्रक्रियाओं और अवचेतन में सुप्त कामनाओं को विश्लेषण द्वारा चित्रित किया गया है ।"11

कथा लेखिका सरिता कुमारी कहती हैं कि, 'उसके हिस्से की धूप' में पुराने नैतिक मूल्यों या मानव मूल्यों का विरोध किया गया है, और प्रेम संबंधी या सेक्स संबंधी नयी नैतिकता का उजागर किया है । इसमें स्त्री और पुरुष दोनों अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को स्थापित तो करना चाहते हैं, लेकिन विघटन में नारी अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को स्थापित करने की प्रक्रिया में या तो टूट जाती है या बिखर जाती है । मृदुला जी ने 'मनीषा' के व्यक्तित्व को पूरी तरह जी कर इसे उजागर किया है । प्रेम के विविध रूपों को उभारा गया है– जैसे त्रास, पीड़ा, घृणा, कुण्ठा, जलन, द्वेष और हिंसा ।''12 मनीषा, 'जितेन' और 'मधुकर' के अस्तित्व से निकल कर अपना स्वतंत्र अस्तित्व खोजती है । परम्परा और भावुकता से यथार्थ के धरातल की खोज इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य है । कुसुम शर्मा कहती है, '''उसके हिस्से की धूप' की नायिका जितेन की पत्नी होती है । अपने जीवन से उदासीन होकर मधुकर की सहवासी होती है । पर चार वर्ष बाद जितेन से पुनः मिलने पर उसके साथ के लिए व्याकुल हो जाती है । हर किसी के साथ बिताया गया जीवन अपने से अलग मानती है । कहीं कोई स्थानापन्न नहीं है । "13

निष्कर्ष:

मृदुला गर्ग जी का साहित्य सृजन उनके चिंतन–मनन के अनुरूप है । उनका चिंतन अधिक सच्चा, कालसापेक्ष है जो उनकी कृतियों में फुट पड़ा है । गर्ग जी का मनोजगत मानवतावाद तथा आधुनिकता की यथार्थदृष्टि के मिले–जुले तत्वो से निर्मित है । अतः गर्ग जी का साहित्य कुचली हुई नारी और पुरुष–वर्चस्व के इस समाज में नारी की वास्तविक स्थिति के अत्यंत महत्वपूर्ण दस्तावेज़ हैं ।

'उसके हिस्से की धूप' में मृदुला जी ने नारी संवेदना, मनोभावों, अन्तद्र्वन्द्वों, सोचों, प्रतिक्रियाओं अवचेतन में सुप्त कामनाओं को विश्लेषित किया है । जो सृजनशील लेखिका के रूप में अपने अस्तित्व को खोजती नजर आती है । उसकी इच्छाएं आकाक्षाएँ आधुनिकतावादी होने की ओर इशारा करती है । इस उपन्यास के बारे में यह दावा किया गया है, यह प्रेम कहानी तो है, लेकिन प्रेम इसकी समस्या नहीं है । यह मानव मात्र के लिए स्वतंत्रता की मांग करता है, जो स्त्री और पुरुष दोनों को समान रूप से चाहिए । यह उपन्यास आधुनिकता के नये मानदण्ड स्थापित करता है । इसमें प्रेम के विविध रूपों को उभारा गया है । जैसे–त्रास, पीड़ा, अहम्, घृणा, जलन, कुण्ठा, द्वेष और हिंसा । वह जिसे प्रेम समझती हैं, उसकी सहेली 'सुधा' उसे बचकानी रूमानियत मानती है ।

संदर्भ:

1. उसके हिस्से की धूप, मृदुला गर्ग, पृ. 23
2. उसके हिस्से की धूप, मृदुला गर्ग, पृ. 32
3. उसके हिस्से की धूप, मृदुला गर्ग, पृ. 39
4. उसके हिस्से की धूप, मृदुला गर्ग, पृ. 57
5. उसके हिस्से की धूप, मृदुला गर्ग, पृ. 85
6. उसके हिस्से की धूप, मृदुला गर्ग, पृ. 94–95
7. उसके हिस्से की धूप, मृदुला गर्ग, पृ. 17
8. उसके हिस्से की धूप, मृदुला गर्ग, पृ. 123
9. उसके हिस्से की धूप, मृदुला गर्ग, पृ. 126
10. उसके हिस्से की धूप, मृदुला गर्ग, पृ. 126
11. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, गोविंद रजनीश, पृ. 35
12. महिला कथाकारों की रचनाओं में प्रेम स्वरूप–विकास, सरिता कुमार, पृ. 179
13. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास: विविध प्रयोग, कुसुम कुमार, पृ. 123